आज की मुरली का सार --- Date: 18-05-2014

बाबा ने आज की मुरली में हमें फर्स्ट क्लास सेवाधारी बनने की, कर्म और योग का बैलेंस रखते हुए आगे बढ़ने की शिक्षा दी हैं.

फर्स्ट क्लास सेवाधारी की विशेषता कौन सी होती हैं?

फर्स्ट क्लास सेवाधारी की विशेषता हैं, चाहे जो भी स्थूल सेवा कर रहे हैं, लेकिन हर कर्म द्वारा, हर कदम द्वारा बाप के गुण और कर्तव्य को प्रसिद्ध करें. सेवा करते हुए भी अन्य आत्मा अनुभव करें की ये मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सुख का सागर या मास्टर शांति का सागर आत्मा हैं, उसे ही फर्स्ट क्लास सेवाधारी कहा जायेगा. फर्स्ट क्लास सेवाधारी अर्थात एक समय में तीन प्रकार की, यानी मूर्त द्वारा, मनसा द्वारा और कर्म द्वारा भी सेवा करें. मूर्त से अलौकिक सेवाधारी की झलक अर्थात फरिश्तेपन की झलक दिखाई दे और मनसा अपने श्रेष्ठ वृति द्वारा सेवा करें, और कर्म से अन्य आत्मा को ज्ञान, सुख, और शांति देने की सेवा करें - ऐसे एक ही समय में तीन प्रकार की सेवाएं इकट्ठी करें इसको कहा जाता हैं फर्स्ट क्लास सेवाधारी.

कर्म और योग का बैलेंस रखते हुए कैसे आगे बढ़े?

कर्म करते हुए योग की पावरफुल स्टेज रहे इसको ही कर्म और योग का बैलेंस रखना कहते हैं. बैलेंस में रहने से ही हम तीव्र गति में रह सकते हैं, नहीं तो हम साधारण गति में आ जायेंगे. पहले योग अर्थात याद या कनेक्शन में रहने का प्रेकटिकल रूप क्या हैं, प्रमाण क्या हैं और प्राप्ति क्या हैं उसकी महीनता में जाओ, रुहानियत की गुहियता में जावो तब फरिश्ता रुप प्रत्यक्ष होगा. बाबा ने विदेश सेवा का एक्जाम्पुल देते हुए कहा, जैसे विदेश की सेवा में वाचा से ज्यादा दृष्टि का और रुहानियत कि शक्ति का प्रभाव रहा और फरिश्तेपन कि प्रत्यक्षता से रिज़ल्ट भी अच्छी निकली, तो हर सेवा करते भी योग की पावरफुल स्टेज रहे तो हमारे फरिश्तेपन कि प्रत्यक्षता होगी और हर सेवा में सफलता जरूर मिलेगी.

ॐ शांति.